Vol 6 Issue 7 April 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 3.8014(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 7 | APRIL - 2017

REVIEW OF RESEARCH

हिन्दी उपन्यासों में किसान–विमर्श

सुनील कुमार सुपुत्र श्री फकीर चन्द
पीएच.डी. शोधार्थी, हिन्दी–विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र .

प्रस्तावना :

भारत एक कृषि प्रधान देश है यहां की लगभग ७० फीसदी आबादी गांवों में रहती है और खेती–किसानी कार्यों पर जीवन–यापन करती है। हिन्दी उपन्यासकारों ने विभिन्न विषयों को लेकर विभिनन प्रकार के उपन्यासों की रचना की। हिन्दी साहित्य के उपन्यासकारों ने सामाजिक और आंचलिक उपन्यासों के वर्ण्य विषय के रूप में किसान जीवन को प्राथमिकता दी तथा भारतीय किसान जीवन की विभिन्न प्रकार परिस्थितियों का यथार्थ अंकन किया है। हिन्दी उपन्यासों में किसान जीवन का सर्वप्रथम वर्णन शिवपूजन सहाय के उपन्यास 'देहाती दुनिया' में हुआ है जिसमें भोजपुर जनपद के अंचल का चित्रण प्राप्त होता है। इसके बाद निराला के 'बिल्लेसुर बकरिहा' में किसान जीवन का चित्रण मिलता है। निराला के बाद मुंशी प्रेमचन्द ने तो किसानों को ऐसा चित्रण अपने उपन्यास 'गोदान' में इस प्रकार किया है जो आज भी प्रासंगिक है। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द के रंगभूमि तथा कर्मभूमि में भी किसान जीवन को देखा जा सकता है। प्रेमचन्द के बाद नागार्जुन के 'बलचनामा', 'बाबा बटेसरनाथ' आदि, 'फणीश्वरनाथ रेणु' के 'मैला आंचल', 'परती परिकथा', रामदरश मिश्र के 'पानी के प्राचीर', 'जल टूटता हुआ', 'सूखता हुआ तालाब', शिवप्रसाद सिंह का 'अलग–अलग वैतरणी', हिमांशु श्रीवास्तव का 'नदी फिर बह चली', विवेकी राय के 'बबूल', 'लोक ऋण' तथा 'सोनामाटी', जगदीश चन्द्र के 'धरती धन न अपना', भैरव प्रसाद गुप्त के 'गंगा मैया', संजीव के 'फांस', राजकुमार राकेश के 'कंदील', सुनी चतुर्वेदी का 'काली चाट' तथा पंकज सुबीर के 'अकाल में उत्सव' इत्यादि उपन्यासों ने किसान विमर्श का वर्णन किया है।

हिन्दी उपन्यासों में किसान विमर्श का आर्थिक चित्रण

भारतीय किसान आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है। जमींदार, साहूकार, महाजन तथा सरकारी तन्त्र सभी किसान को लूट रहे हैं। किसान दरिद्रता, शोषण तथा निरक्षरता आदि का शिकार हो गया है। हमारे समाज में आर्थिक असमानता किसानों की दरिद्रता का सबसे बड़ा कारण है। इसके फलस्वरूप जो जमींदार अच्छी जमीनों के मालिक थे वो ओर अधिक जमीनें खरीद गए तथा छोटी जोत के किसान अपनी जमीन को बेचने के लिए मजबूर हैं। 'गोदान' उपन्यास में भोला होरी से कहता है– ''कौन कहता है कि हम तुम आदमी हैं। हम में आदमीयत कहां? आदमी तो वह है जिसके पास धन है, अख्तियार है, इल्म है। हम लोग तो बैल हैं और जुतने के लिए पैदा हुए हैं।''[१]

जमींदारों के शोषण ने किसानों की स्थिति को दयनीय बना दिया। 'बलचनामा' उपन्यास में बलचनामा के पिता की मृत्यु होने पर उसके क्रियाक्रम के लिए उनके पास पैसे नहीं थे, उस क्रियाक्रम को ऋण के पैसों से ही करवाना पड़ता है।[२]

'प्रेमाश्रम' उपन्यास में जमींदार परिवार की एक सदरया विद्या कहती है– ''उस समय जब अकाल पडा और प्लेग भी फैला, तब हम लोग इलाके पर गये... उन दिनों की बाबू जी की निर्दयता देखकर तेरे रोयें खड़े हो जाते थे। बाबू जी को उड़ाने के लिए रुपये न मिलते तो वह चिढ़कर आसामियों पर गुस्सा उतारते। सौ–सौ मनुष्यों को एक पांत में खड़ा करके हंटरों से मारने लगते। बेचारे तड़प–तड़प कर रह जाते, पर उन्हें तनिक भी दया न आती थी।''[३]

'गोदान' के जमींदार राय साहब को रामलीला कराने के लिए गांव से पांच सौ रुपये की अपेक्षा है।[४]

किसानों की आर्थिक स्थिति का वर्णन करते हुए 'फांस' उपन्यास में संजीव कहते हैं– ''महंगे बीजों, खादों और कीटनाशकों की वजह से ज्यादातर किसानों को कर्ज लेना पड़ता है। सरकारी बैंकों में खसरा–खतौनी, नकल दुरूस्ती समेत कई लफड़े कर्ज की राशि भी कम है। फलतः ज्यादातर किसान वहां जाने से घबराते हैं और उन्हें ऋण ऐजेंसियों और गांव के साहूकारों से कर्ज लेना ही आसान लगता है।''[५]

सुनील चतुर्वेदी 'कालीचाट' उपन्यास में साहूकारों द्वारा किये जाने वाले शोषण का वर्णन करते हुए कहते हैं– ''खेत तो भीमा बा भी गिरवी रख सकते हैं। पर भीमा बा का नियम जरा कड़क है वो दस रुपये सैंकड़े का ब्याज वसूलते हैं और गिरवी रखे टुकड़े की फसल भी खुद ही लेते हैं। अब कुल पांच एकड़ में से दो एकड़ उनके पास गिरवी रख दूं, तो छोरे–छोरी खाएंगे क्या?''[६]

'कंदील' उपन्यास में रणसिंह अपनी पारिवारिक स्थिति का वर्णन करते हुए कहता है– ''दोनों छोहरों के ब्याह किये तो घणा पैसा लगा। अब मेरी गांठ में तो था नई। बंक के जट की चिरौरी विनती की तब जाके ईक और करज खोपड़े पर धर ल्या। खेत–खडे के इलावा घर में आमदन

दूसरी तो है नई। गरचे कहीं खुदा ना खासता फसल टूट–फूट ले तो ईब समझो रोटी के लाले आ जाने वाले हुए।''[७]

पंकज सुबीर ने 'अकाल में उत्सव' उपन्यास में सूदखोरो की शोषण नीति का बखूबी वर्णन किया है– ''रामप्रसाद का पिता जब मरा, तो जमीन के साथ बैंक का, सोसाइटी का, सूदखोरों का कर्ज भी छोड़ गया था। इलाके में सूदखोरों का सूद बड़े विचित्र तरीके से चलता था, जैसे आपने यदि मुझसे अभी इस महीने की दस तारीख को एक हजार रुपये लिए हैं, तो आप अगले महीने की दस तारीख, मतलब ठीक एक महीने बाद दो हजार वापस करेंगे या यह कि आप मुझसे दस हजार रुपये अभी ले रहे हैं, जिनको आप छह माह बाद एक हजार रुपये प्रति महीने के हिसाब से ब्याज देकर लौटाने की बात कर रहे हैं, तो आपको अभी दस हजार नहीं मिलेंगे, आप दस हजार पर अंगूठा लगाएंगे और मिलेंगे आपको केवल चार हजार, छह हजार तो ब्याज के कट गए न भाई। अब छह महीने बाद दस हजार ही लौटाना है आपको। यह सूदखोर अपने कर्ज की वसूली अपने ही तरीके से करते हैं। यह वसूल सकते हैं, इसलिए देते हैं। किसान की किस्मत तो कर्जे से बंधी ही है उसे तो लेना ही है।''[८]

किसान का जीवन अभावों की कड़ी के समान है। नागार्जुन का बलचनमा दरिद्रता के कारण दास होकर जीवन व्यतीत करने को विवश हो जाता है। विलसी जीवन व्यतीत करने वाले जमीदारों का वह शिकार होता है और जमींदारों के यहां जूठन से तथा उनकी गलियों से अपना पेट भरना पड़ता है।[९] किसान के घर में दवाई के लिए पैसे नहीं होते, इस प्रसंग का वर्णन 'रेणू' के मैला में देखा जा सकता है– मैला आंचल का डॉक्टर जब पास के एक गांव में मरीज को देखने जाता है और जब इंजेक्शन लगाने की तैयारी करता है तब लडत्रकी का बाप पूछ ही बैठता है– ''डॉक्टर साहब यह जो जंकसैन दे रहे हैं, इसका कितना होगा?''[१०]

इस प्रकार किसान की स्थिति अत्यन्त दयनीय है एक तरफ तो फसल उपजाने के लिए उसे कर्ज लेना पड़ता है तथा दूसरी तरफ पहले वाला ऋण न चुका पाने के कारण जमींदार तथा साहूकार उसकी फसल को खलिहान से ही ले जाते हैं।

हिन्दी उपन्यासों में किसान–विमर्श का सामाजिक चित्रण

हिन्दी उपन्यासों में किसान विमर्श के सामाजिक चित्रण के अन्तर्गत– जातिवाद, झगड़े एवं मन–मुटाव, अनैतिक सम्बन्ध, कृषक का सभाव के विभिन्न रीति–रिवाजों का अनुसरण करना, संयुक्त परिवार के विघटन, सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन, दहेज–प्रथा, अनमेल विवाह, अन्तर्जातीय विवाह इत्यादि प्रसंगों को देखा जा सकता है।

जातिवाद को कृषक जीवन में रेणु के 'मैला आंचल' में देख सकते हैं। 'मैला आंचल' में राजपूत, कायस्त, ब्राह्मण, यादव इत्यादि जातियों के लोग हैं। विभिन्न टोलियां–पोलिया टोली, कुशवाहा टोली, छत्री टोली और रैदास टोली। विभिन्न जातियां तो हैं ही उनमें आपसी भेदभाव भी है। सिपहैया टोली वाली भोज के समय गवाले के साथ पंगत में बैठने के लिए तैयार नहीं है। लोगों के मन में जातिवाद इतना घर कर गया कि डॉक्टर जब गांव में पहली बार आते हैं तो सबसे पहले लोग उनकी जात को जानना चाहते हैं। डॉक्टर ठीक ही सोचते हैं– ''जाती बहुत बड़ी चीज है। जात–पांत नहीं मानने वालों की भी जाति होती है। सिर्फ हिन्दू कहने से पिंड नहीं छूट सकता। ब्राह्मण है... कौन ब्राह्मण?गौत्र क्या है?... शहर में कोई किसी से जात नहीं पूछता। शहर के लोगों की जाति का क्या ठिकाना, लेकिन गांव में तो बिना जाति के आपका पानी नहीं चल सकता।''[११] जातिवाद के रोग से नागार्जुन का बलचनमा भी ग्रस्त है। बलचनामा का बूढ़ा वैद्य इसके कारण ही छोटी जातिवालों को यहां नहीं जाता है।[१२]

किसानों का अंधविश्वासी होना भी किसान जीवन की प्रमुख समस्या है। 'बलचनमा' उपन्यास में नागार्जुन ने इस स्थिति का वर्णन किया है– ''दामों ठाकुर भूत झाड़ने के बहाने बांस सुखिया को अकेली छोड़ने को कहता है... छोटा मालिक बलचनमा की बहन रेवनी पर बलात्कार करने की कोशिश करता है।''[१३]

'फांस' उपन्यास में शिबु की मृत्यु पर पुजारी महाराज की पहली प्रतिक्रिया थी– ''यह बच्चा अपशकुनी है। जीवन नहीं मृत्यु गर्भ में ही था कि बाप को खा गया, गर्भ से निकला तो मां को, शिबू के घर आया तो शिबू को।''[१४]

'गोदान' उपन्यास में होरी के अंतिम क्रियाक्रम की स्थिति हीरा ने रोते हुए कहा– ''भाभी, दिल कड़ा करो, गो–दान करा दो, दादा चले।... धनिया यक्ष की भांति उठी, आज तो सुतली बेची थी, उसके बीस आने पैसे लाई और अपने पति के ठंड़े हाथ में रखकर सामने खड़े दातादीन से बोली– महाराज, घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा। यही पैसे हैं, यही इनका गोदान है।''[१५]

भारतीय किसान बिरादरी से बंधा होता है। बिरादरी का भ्य पिशाच की भांति उसके सिर सवार रहता है। बिरादरी से अलग होकर जीवन जीने की वह कल्पना भी नहीं कर सकता। शादी–ब्याह, मुंडन–छेन, जन्म–मरण सब कुछ बिरादरी के हाथ में होते हैं। अतः कृषक बिरादरी से बाहर नहीं जा सकता। बलचनमा को भी मुसलमानों का छुआ खाना खाते समय डर है कि कोई बिरादरी वाला देख लेगा तो नाहक का बखेड़ा हो जाएगा।[१६]

कृषक समाज में सामाजिक उत्तरदायित्व की इकाई परिवार ही होते हैं। अच्छे तथा बुरे कार्यों का उत्तरदायित्व भी परिवार पर ही रहता है। उत्सवों आदि के निमंत्रण परम्परागत रूप से व्यक्तियों को न दिए जाकर परिवारों को दिए जाते हैं। सभी के सामाजिक कर्त्तव्यों तथा नियमों को पारिवारिक सम्बनधों के अनुरूप समझा जाता है।

'फांस' उपन्यास में दहेज प्रथा की समस्या को देखा जा सकता है– ''मुलगे का पिता, मुलगे की पढ़ाई। एक बार नौकरी लगी नहीं की सारा कुछ ठीक हो जाएगा, तुकाराम–डिमाण्ड?

मुलगे का पिता– अपनी तो कोई डिमाण्ड नहीं, लेकिन आपका इतना देखना तो फर्ज बनता है कि आपकी मुलगी जहां जाए, सुखी रहे। रेट तो सबको मालूम है– एक हीरो होण्डा, एक लाख नगद।''[१७] बलचनमा के राधा बाबू को अपने पुत्रों की शादी में हाथी–घोड़ा आदि दहेज में मिलता है।[१८] इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जातिवाद कृषक जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है। कृषक जीवन में अंधविश्वास, दहेज–प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों को भी देखा जा सकता है। किसान साधारण जीवन व्यतीत करता है। इसी साधेपन के कारण वह विभिनन परम्पराओं में बंधा हुआ है।

हिन्दी उपन्यासों में किसान–विमर्श का राजनीतिक चित्रण

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में किसान राजनीति से परिचित एवं परिचालित है। गांव के विषय में सबकी यह धारण होती है कि वे सहज और सरल होते हैं तथा राजनीति से गांव का कोई सम्बन्ध नहीं होता। स्वतन्त्रता से पूर्व गांवों में थोड़ी बहुत राजनीतिक चेतना पहुंच चुकी थी, जो स्वतन्त्रता के बाद विकसित हुई। गांव में पंचायती राज, मताधिकार, संविधान के धर्म–निरपेक्ष लोकतान्त्रात्मक स्वरूप इत्यादि विभिन्न राजनीतिक कार्यों से आई है। आज कृषक भी अपने अधिकारों को जानते हैं और उनके प्रति जागरूक हैं। नागार्जुन का बलचनमा, जिसने मां और बाप के मर जाने के कारण जमींदारों हाथ क्रूर यातनाएं सही थी। कल्पनाओं में आजादी का सुख अनुभव करता है। उसे भी आशा थी कि स्वराज होने पर सुख

के दिन देखने को मिलेंगे।''[१९]

एक अन्य प्रसंग में बलचनमा कहता है– ''उन दिनों गांधी का बड़ा जोर था। ...गांधी महात्मा सरकार को झुकाना चाहते थे... सन् तीस–बत्तीस का जमाना था। गांधी जी के हुकुम से बाबू लोग गिरफ्तार हो रहे थे। हमारे फूल बाबू को भी गांधी महात्मा की हवा लगी थी, मगर मेरी समझ में नहीं आता था कि क्यों लोग नाहक आपने को पकड़वाते थे।''[२०] नागार्जुन के 'बलचनमा' में कई ऐसे स्थल हैं जहां कृषक, मजदूर एवं जमीदार तुलकर एक–दूसरे के आमने–सामने खड़े हो जाते हैं। खेतों पर संघर्ष होता है। सोशलिस्ट नेता के प्रभाव से बलवान के अंदर का किसान भी करवट बदलने लगता है। वह किसानों में चेतना जगाकर जमींदार के खिलाफ संघर्ष शुरू कर देता है।[२१] 'फांस' उपन्यास में एक किसान सरकार को कह रहा है– ''पानी बेचा, नदी बेचा, पहाड़ बेचा, जमीन बेची, खनिज बेचा, पूरा देश बेच दिया तुमने कारपोरेट बनियों को। तुम्हारी जगह जेल में है।''[२२]

सुनील चतुर्वेदी ने 'कालीचाट' उपन्यास में आलू और चिप्स के भाव की तुलना करते हुए कहा है– ''आज बाजार में सबसे सस्ता क्या है?किसान का उत्पादन। किसान को आलू का भाव दो रुपये किलो मिलता है और उसी आलू से बने पटेटो चिप्स सौ गुना अधिक दाम पर बाजार में बेचे जाते हैं।''[२३]

इस प्रकार हिन्दी उपन्यासों में किसान–विमर्श के तीन चित्रण प्रमुख रूप से देखे जा सकते हैं। इन चित्रणों में आर्थिक स्तर, सामाजिक स्तर तथा राजनीतिक स्तर तीनों में ही किसान की स्थिति दयनीय है। किसान दिन–रात खेतों में मेहनत करता है। कभी तो प्राकृतिक आपदाएं जैसे– अतिवृष्टि, ओलावृष्टि, अकाल, सूखा इत्यादि उसकी फसलों को नष्ट कर देती हैं, तो कभी किसान की पकी–पकाई फसल को साहूकार ले जाते हैं। किसान की इसी स्थिति के कारण निरंतर किसान आत्महत्याएं बढ़ रही हैं। जिनका वर्णन संजीव ने अपने उपन्यास 'फांस' में किया है। पंकज सुबीर के उपन्यास 'अकाल में उत्सव' में एक तरफ सरकार मुख्यमंत्री के कार्यक्रम के लिए उत्सव मनाया जा रहा है। वही दूसरी तरफ फसल न हो पाने के कारण किसान काल के मुंह में जा रहा है।

संदर्भ :

१.प्रेमचन्द, गोदान, प्रकाशन संस्थान, संस्करण २०१५, पृ. २३
२.नागार्जुन, बलचनामा, पृ. ३
३.प्रेमाश्रम, प्रकाशन संस्थान, पृ. ८५
४.गोदान, प्रकाशन संस्थान, संस्करण २०१५, पृ. १६
५.संजीव, फांस, वाणी प्रकाशन, संस्करण २०१५, पृ. १०८–१०९
६.सुनील चतुर्वेदी, कालीचाट, अंतिका प्रकाशन, संस्करण २०१५, पृ.
७.राजकुमार राकेश, कंदील, संस्करण २०१५, पृ. १५
८.पंकज सुबीर, अकाल में उत्सव, संस्करण २०१६, पृ. ८
९.नागार्जुन, बलचनामा, पृ. ६–७
१०.फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आंचल, पृ. ९६
११.वही, पृ. ४१
१२.नागार्जुन, बलचनमा, पृ. ९
१३.वही, पृ. २२
१४.संजीव, फांस, वाणी प्रकाशन, संस्करण २०१५, पृ. १०७
१५.प्रेमचन्द, गोदान, प्रकाशन संस्थान, पृ. ३२८
१६.नागार्जुन, बलचनमा, पृ. १३०
१७.संजीव, फांस, वाणी प्रकाशन, संस्करण २०१५, पृ. ९४
१८.नागार्जुन, बलचनमा, पृ. ७६
१९.वही, पृ. ७०
२०.वही, पृ. ४६
२१.वही, पृ. १४४
२२.संजीव, फांस, वाणी प्रकाशन, संस्करण २०१५, पृ. २५०
२३.सुनील चतुर्वेदी, कालीचाट, अंतिक प्रकाशन, संस्करण २०१५, पृ. १४२

सुनील कुमार सुपुत्र श्री फकीर चन्द
पीएच.डी. शोधार्थी, हिन्दी–विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र .

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com